

प्रतीक पूजा का विज्ञान और तत्त्वदर्शन

कर्मकाण्डों के पीछे छिपा मनोविज्ञान, आत्मपरिष्कार का रहस्य और जीवन साधना के सूत्र।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

हमारी भ्रांति बनाम वैज्ञानिक वास्तविकता

भ्रांति



[धारणा]: ईश्वर = स्तुति और उपहारों का भूखा



[कर्मकाण्ड]: ईश्वर को रिश्वत देने का प्रयास



[परिणाम]: बिना पुरुषार्थ के मनचाहा वरदान (असम्भव)

वास्तविकता



[धारणा]: ईश्वर = विश्व-व्यवस्थापक
(System Administrator)



[कर्मकाण्ड]: स्वयं को उत्कृष्टता का संकेत देना



[परिणाम]: आत्मपरिष्कार और सत्प्रवृत्तियों का विकास
(निश्चित सफलता)

ईश्वर पर न स्तुति का असर पड़ता है, न निन्दा का। वह केवल हमारी पात्रता देखता है।

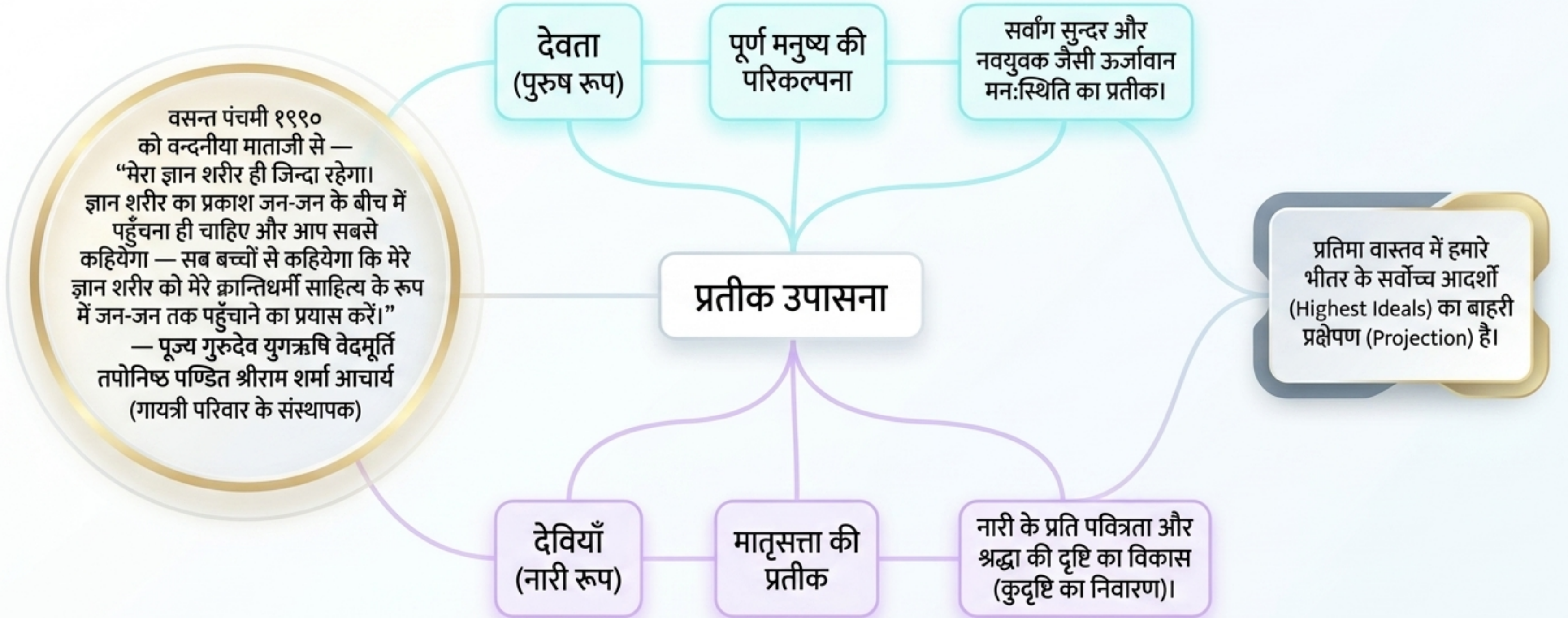
— पूज्य गुरुदेव

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान-जन के बीच में पहुँचगा और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन ततक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूति तपोनिष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

देव-प्रतिमाएँ: आदर्शों का मनोवैज्ञानिक ब्लूप्रिंट

The Divine Blueprint (दिव्य रूपरेखा)



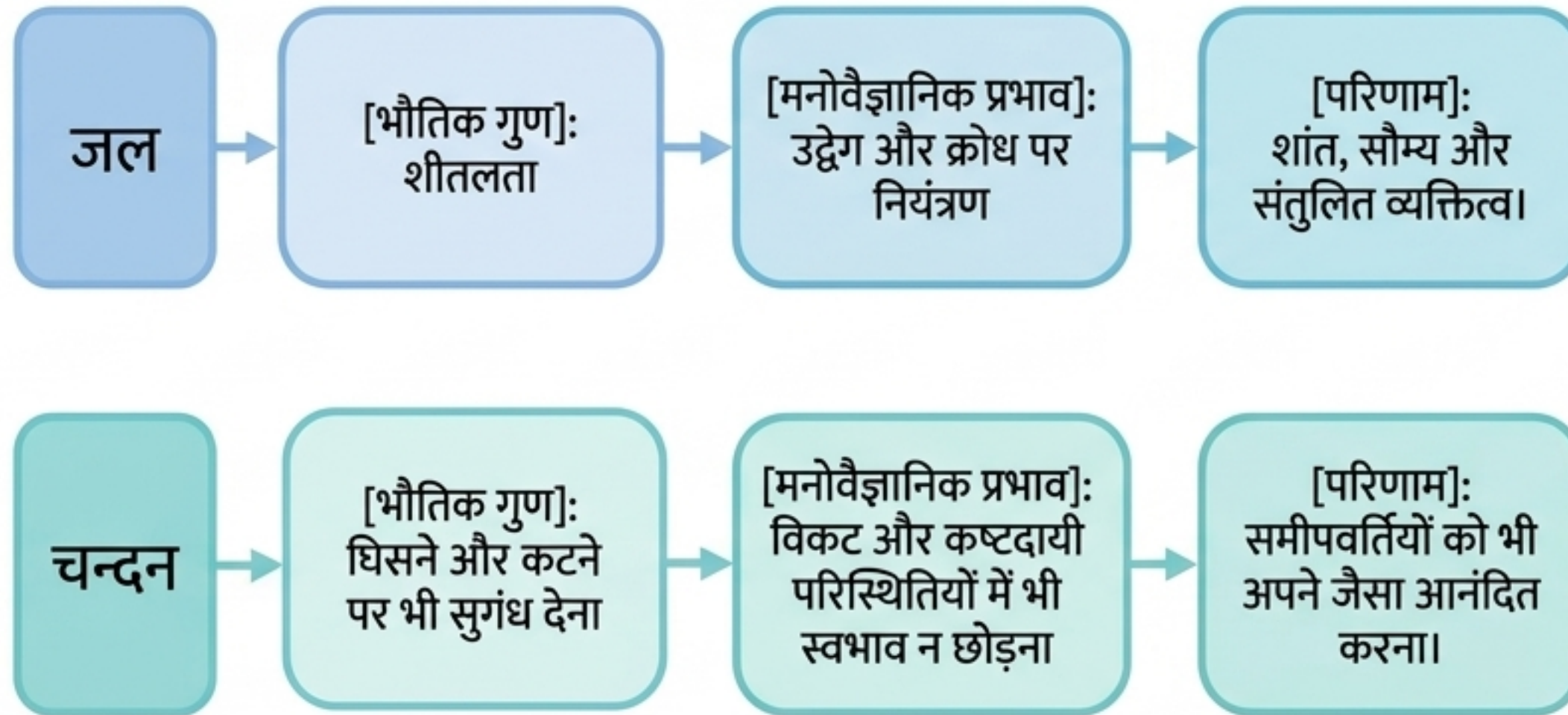
देवपूजा के ६ प्रतीक: आत्म-प्रशिक्षण का ढाँचा



ईश्वर को इन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है, यह हमारे अपने दृष्टिकोण के परिष्कार के लिए हैं।

जल और चन्दन: आंतरिक संतुलन का विज्ञान

The Divine Blueprint (दिव्य रूपरेखा)



“

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन—जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
—जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

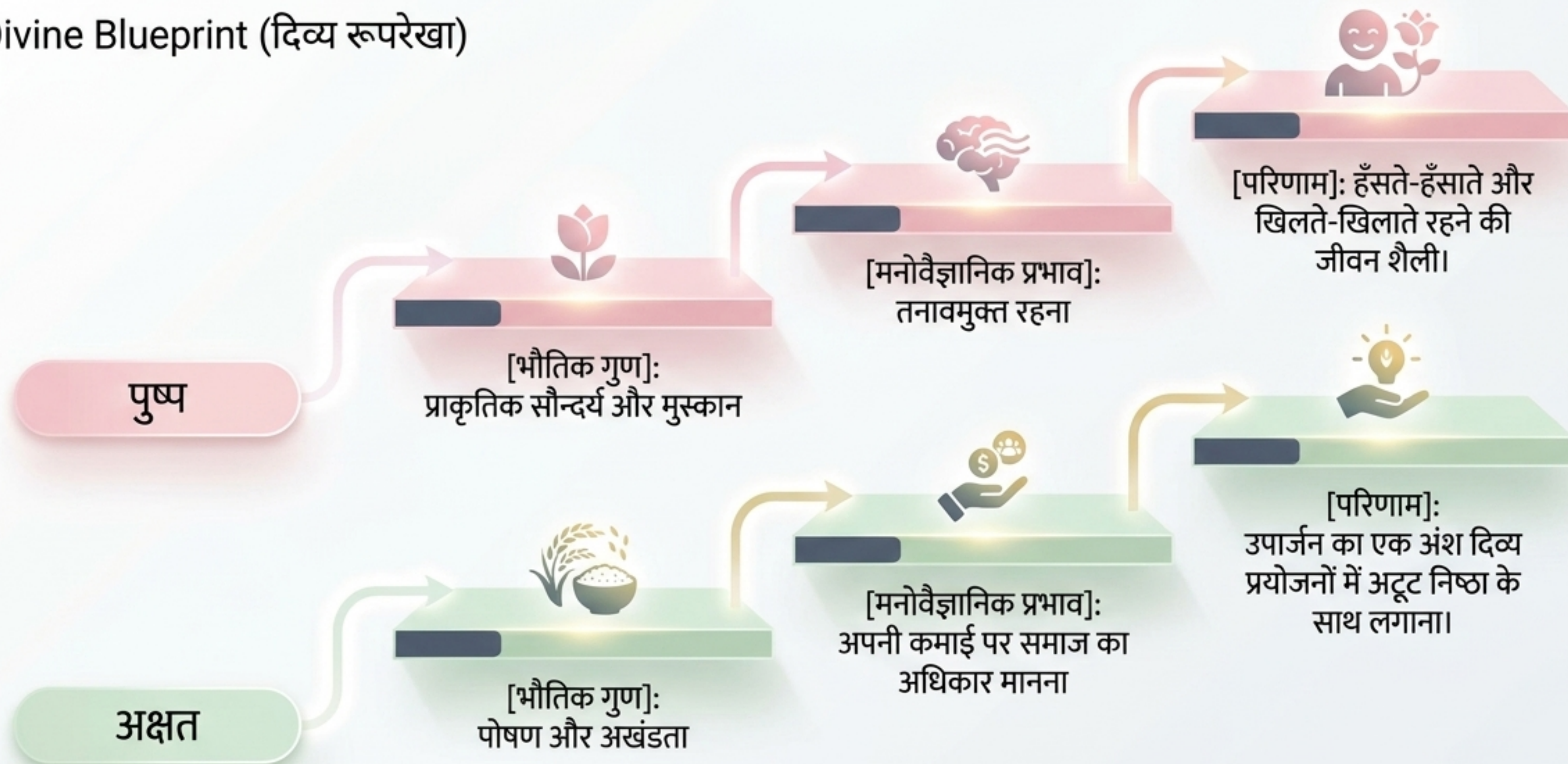
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

दीपक और धूप: ऊर्जा और प्रभाव का विकिरण



पुष्प और अक्षत: व्यवहार और अर्थ-व्यवस्थापन

The Divine Blueprint (दिव्य रूपरेखा)



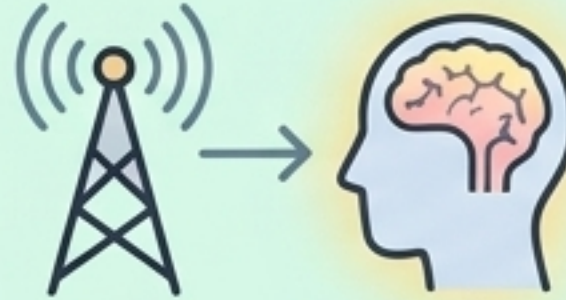
रेल व्यवस्था और पूजा-विधान: एक वैज्ञानिक समानता

[स्थिति 1: रंग/झंडी]



लाल/हरी झंडी का अपना कोई स्वतंत्र महत्व या शक्ति नहीं है।

[स्थिति 2: संकेत ग्रहण]



यह झंडियाँ रुकने या चलने का मात्र 'संकेत' (Signal) देती हैं।

[स्थिति 3: क्रियान्वयन]



जब संकेतों को समझकर इंजन चलाया जाता है (Action), तभी ट्रेन आगे बढ़ती है।

निष्कर्ष:

ठीक इसी तरह, भगवान को रिझाने से कुछ नहीं होता। पूजा-प्रतीक मात्र 'झंडियाँ' हैं। जब तक हम पुरुषार्थ (Action) नहीं अपनाते और पात्रता विकसित नहीं करते, तब तक कामनाएँ पूरी नहीं होतीं (फसल काटने के लिए बीज बोना अनिवार्य है)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्य साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर

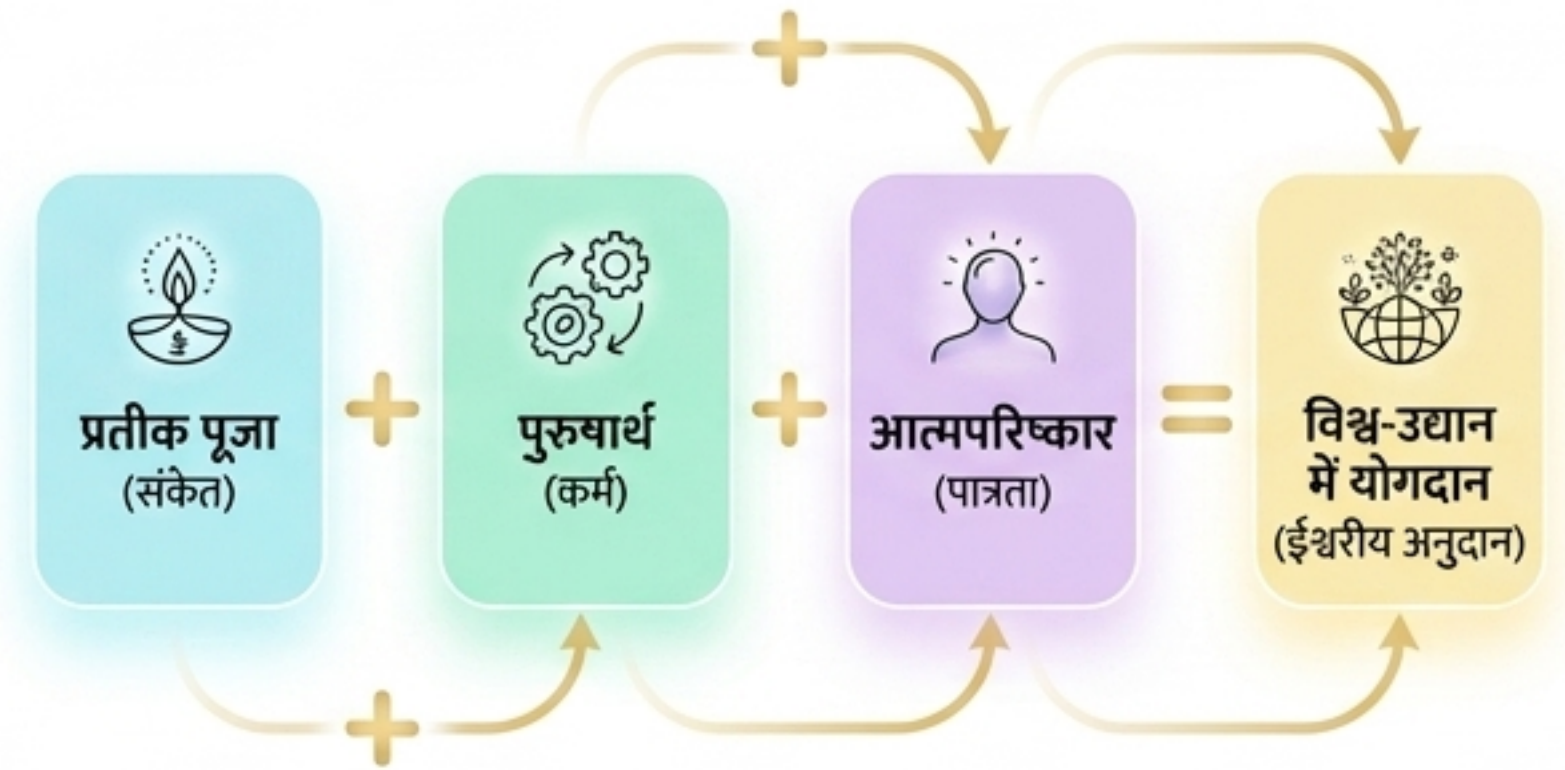
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को

मेरे **क्रान्तिधर्मी साहित्य**

के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्कर्ष: पात्रता का विकास
ही सच्ची उपासना है



लकीर पीटने वाले कर्मकाण्डों से बाहर निकलें।
अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में उत्कृष्टता का समावेश करें।
यही महाकाल का आमंत्रण है और यही युग-धर्म है।